VASHI SHARMA

Agniveer
Inspires

अग्निसंकल्प

राष्ट्रभक्ति और धर्मरक्षा के लिए प्रेरित करती
कविताओं का संग्रह

Agniveer

www.agniveer.com

अग्निसंकल्प

राष्ट्रभक्ति और धर्मरक्षा के लिए प्रेरित करती
कविताओं का संग्रह

अग्निसंकल्प

कॉपीराइट © २०१६ अग्निवीर

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस पुस्तक को सम्पूर्ण या आंशिक रूप से प्रकाशक की पूर्व में लिखित अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या यान्त्रिक या लिखित या प्रतिलिपि के द्वारा या रिकार्डिंग से या अन्य किसी भी माध्यम से और किसी भी स्वरुप में संग्रहित या प्रसारित नहीं किया जा सकेगा।

यह पुस्तक प्रस्तुत विषय वस्तु की प्रामाणिक और अधिकृत जानकारी देने के लिए बनाई गई है।

जानकारी के लिए संपर्क करें

books@agniveer.com

पुस्तक आकार एवं संयोजन – रोनक त्रिवेदी

प्रथम संस्करण : एप्रिल २०१६

अग्निसंकल्प

राष्ट्रभक्ति और धर्मरक्षा के लिए प्रेरित करती
कविताओं का संग्रह

: लेखक :

वाशि शर्मा

भूमिका

नवयुवाओं में मातृभूमि के प्रति आदर और सम्मान, मन में राष्ट्रभक्ति की भावना, और धर्मरक्षा के लिए अपने जीवन को खपा देने का भाव पैदा करने के प्रयास हेतु "अग्निसंकल्प" नामक यह छोटी सी पुस्तक की रचना की गई है।

आशा है यह कविताएँ युवाओं में राष्ट्रवाद की नवचेतना का निर्माण करने में योगदान देंगी।

। वन्दे मातरम् ।

वाशि शर्मा
२२ एप्रिल २०१६, राजस्थान

विषय सूची

भूमिका
फूल नहीं धधकता अंगार हूँ १
आर्यों को सन्देश २
अग्नि संकल्प ४
धधक धधक हे सत्य की अग्नि ६
प्रयाण ८
मातृभूमि १०
मादर ए वतन १२
ध्वजा ओम की १४
हकीकत राय का अमर बलिदान १६
महाराणा प्रताप २०
बचपन और जवानी २५
दुनिया और मैं २७
भाई तू क्यों नहीं आया ? २८
माँ ३०
लेखक परिचय ३३
अग्निवीर - संक्षिप्त परिचय ३४

१

फूल नहीं धधकता अंगार हूँ

फूल नहीं धधकता अंगार हूँ मैं ।
थके स्वाभिमान को झकझोरती ललकार हूँ मैं ।।

सोई भारत की वर्षों से अन्तरात्मा ।
नवजागरण की पुकार हूँ मैं ।।

ग़ुलामी बस चुकी है ख़ून में ।
पर क्रांति की टंकार हूँ मैं ।।

सर अब हमारा कभी न झुकेगा ।
विजयमाला का शृंगार हूँ मैं ।।

भस्म होगी सब दासता मानस की ।
सच्चे स्वाधीनता की चिंगार हूँ मैं ।।

बुझेगा न ये दीपक चाहे कितना ज़ोर लगा लो ।
हर आँधी तूफ़ान की बेबस हार हूँ मैं ।।

अग्निमय हूँ अग्निरूप हूँ अग्नि का उपासक हूँ ।
अग्नि मेरी आत्मा सत्याग्नि का ही विस्तार हूँ मैं ।।

१

आर्यों को सन्देश

देशभक्त आर्यों को अग्निवीर का सन्देश

आर्य! उठ फिर भाग्य की उगती उषा के रंग हैं ।
एक कौतुक है कि जिस से देव दानव दंग हैं ।।

शीश पर तेरे सजाने को सुनहरा ताज है ।
हो रहे अभिषेक के तेरे सजीले साज हैं ।।

दिग्विजय का गीत गाने को दिशाएं हैं अधीर ।
कीर्ति का कालख उड़ाने को हवाएं हैं अधीर ।।

सभ्यता डायन बनी है, राज्य है रावण बना ।
क्रूर कौतुक है कि कृष्णा-कान्त दुशासन बना ।।

क्लीव क्यों अर्जुन! खड़ा है? घोर रणचंडी जगा ।
शत्रु दल के दिल हिलें, टंकार कर गांडीव का ।।

क्रूरता पर कंस की फिर कृष्ण बन कर वार कर ।
शीश रावण का उड़ा, बेड़ा सिया का पार कर ।।

आज क्यों लंका अधिक प्यारी सिया से है तुझे?
देखता क्या है? पवन सुत! पाप का गढ़ फूँक दे ।।

राम बनना है तुझे, घर से निकल वनवास ले ।
ले! अभी लंका विजय होती तुझे है रास ले ।।

है डरा जाता वृथा क्यों? सिंह के सर पर दहाड़ ।
बाघ की मूछें पकड़, दुष्यंत सुत! हिंसक पछाड़ ।।

गर्ज से तेरी हृदय संसार के जाएँ दहल ।
प्रेम की तानें उड़ा, पाषाण तक जाएँ पिघल ।।

गर्ज से गंभीर सागर की उमड़ती ठाठ हो ।
प्रेम का फिर से झकोरों में पवन के पाठ हो ।।

- पंडित चमूपति

१

अग्नि संकल्प

कह गया अभी मन में कोई, सन्देश तुम्हे हम देते हैं ।
इस घोर युद्ध की वेला में उदघोष तुम्हे हम देते हैं ।।

हो भीड़ उधर और छीड़ इधर तो चिंता कभी नहीं करना ।
तुम गरजो सिंहों के समान, रण बीच कभी ना तुम डरना ।।

तुम एक अकेले खड़े हुए हो घिरे शत्रु की सेना से ।
पर चकित करो वैरी दल को अपने भीषण बल पौरुष से ।।

अंत तो ये ही होगा कि शव गिरा पड़ा होगा किसी छोर ।
अग्नि भस्म कर बिखरा देगी इस तन को जाने किस ओर ।।

पर अग्नि की जाज्वल्यमान लपटें इतना कर जायेंगी ।
था कोई हृदय से मस्ताना, दुनिया को दिखला जायेंगी ।।

कुछ घने सयाने नीति की कुछ बात बना कर जायेंगे ।
कुछ होंगे प्रशंसा हाथ लिए, कुछ निंदा कर के जायेंगे ।।

पर दूर कहीं इक कोने में हँसता रोता मैं होऊंगा।
फिर कहीं किसी माता की छाया में चलता बढ़ता हूँगा ।।
याद करूँगा जब अतीत, बलिदान बीच रण दिया हुआ।
पाऊंगा मुख को तेजस्वी, अग्नि सम फिर से तपा हुआ ।।

पर फिर से याद वो आएगा जो युद्ध अभी अपराजित है।
जिस सत्य पे अंग कटाए थे वो सत्य अभी अप्रकाशित है ।।

तो लेता हूँ संकल्प कि जब तक शत्रु सैन्य विध्वंस न हो।
विश्राम नहीं लेना तब तक जब तक कि पूर्ण विजय न हो ।।

१

धधक धधक हे सत्य की अग्नि

धधक धधक हे सत्य की अग्नि, पापाचार स्वाहा कर दे ।
बजी रणभेरी धर्मयुद्ध की, नस-नस में चिंगारी भर दे ।।

वो चिंगारी उठे सुलग जब, प्रकटे वैदिक धर्म की ज्वाला ।
आर्यवीर भिड़े पाप, तमस से, सकल विश्व होवे उजियाला ।।

हँसते-हँसते राष्ट्रदेव के, चरणों में मस्तक धर दे ।
प्रचंड पौरुष से आर्यों के,हो जाए जगती दीप्तिमान ।।

सामवेद की पावन ऋचाएं, घर-घर हो गुंजायमान ।
ऋषिओं के युग को ले आये, जगत पिता ऐसा वर दे ।।

परम वैभव को राष्ट्र प्राप्त हो, सन्मार्ग चुने मानव जाति ।
'इदं न मम' का वैदिक दर्शन, स्मरण रहे पुरखो की थाती ।।

सुख-दुःख में ना ईश बिसारें, वह शैया दे अथवा शर दे ।
निकले सत्याग्नि के साधक, वैदिक धर्म की ज्योत जगाने ।।

त्याग दिए सब विषय आकर्षण, अग्निवीर चले धर्म बचाने ।
धरा का आँचल इनकी शैया, छत सिर पर इन्हें अम्बर दे ।।
धधक धधक हे सत्य की अग्नि, पापाचार स्वाहा कर दे ।
बजी रणभेरी धर्मयुद्ध की, नस-नस में चिंगारी भर दे ।।

- आर्यवीर वैदिक

१

प्रयाण

अग्निवीर का सोते सिंहों को प्रयाण सन्देश

करना है प्रयाण मुझे अभी युद्ध क्षेत्र को ।
है शत्रु जहाँ युद्ध की है दुन्दुभी बजा रहा ।।

कर भेड़िए इकट्ठे बढ़ा चला है भीड़ में ।
दिखा के सैन्य भेड़ियों का सिंह को डरा रहा ।।

कहता है सर्वश्रेष्ठ हूँ कि सैन्य है बढ़ा हुआ ।
हैं लाख मेरी तरफ अकेला तू खड़ा हुआ ।।

है सूचना इसे क्या सिंह एक हो तो क्या ।
घातक है लाख भेड़ियों से सिंह सोया हुआ ।।

घसीटेंगे तेरे सैन्य से तुझको ही धरा पर ।
तू चढ़ जा आसमान में आ जा या जमीं पर ।।

झुंडों से घिरा काँपेगा करता हुआ थरथर ।
जिस दिन दहाड़ेंगे हम इस नींद से उठ कर ।।

कहना है आज हर किसी वैरी से ये हमें ।

ये धर्म सिंहों का है जो है प्राण सम हमें ।।

देखा जो इसकी ओर यदि गिद्ध दृष्टि से ।
टुकड़ों में गिना जाएगा इतिहास पृष्ठों में ।।

राणा नहीं तो राणा का भाला तो अभी है ।
कटार म्यान में हैं पर पानी तो अभी है ।।

अब तक तो हो गया जो होना था अनाचार ।
आरम्भ है ये युद्ध का प्रतिशोध अभी है ।।

जागो अभी! सुनो मेरे सोते हुए सिंहों ।
मैं जा रहा हूँ रण को मिल पाऊं ना कहीं ।।

उठ जाओ दहाड़ो और अम्बर को गुंजा दो ।
सबसे ही ये गूंजेगा किसी एक से नहीं ।।

१

मातृभूमि

बन खून दौड़े तन में जिस देश की मिट्टी ।
उसके लिए प्राणों से ज्यादा प्यार पैदा कर ।।

न हो कभी हिंसा यहाँ न हो गमो गुस्सा ।
हर दूसरा अपना है ये जज्बात पैदा कर ।।

अंतर नहीं हो तेरी कथनी और करनी में ।
दिल में जबाँ में जो है वो कर्म पैदा कर ।।

हक छीनना दूजे का तेरा हो नहीं पेशा ।
मजलूम को हक दे सके वो जान पैदा कर ।।

इज्जत दे औरत को मुक़द्दस है वो जहां में ।
कर रक्षा उसकी अपनी माँ की शान पैदा कर ।।

दिल साफ़ हो तेरा चमकते कांच के जैसा ।
रूहों में पाकीज़ा हो ऐसा नाम पैदा कर ।।

सच्चाइयों की राहों का ही तू हो मुसाफिर ।
दफ़न हो झूठ सत्य का तूफ़ान पैदा कर ।।

इंसानियत को दे कुदरती इल्म के तोहफे ।
स्वदेश का दुनिया में ऐसा मान पैदा कर ।।
दुश्मन की गोली के लिए फौलाद से सीने ।
चीरे जो जालिमों को वो हुंकार पैदा कर ।।

दुश्मन को जाकर के दे पैगाम ए दोस्ती ।
तू प्रेम की वीणा से ये झंकार पैदा कर ।।

अल्लाह है जो मौजूद काबा शरीफ में ।
काशी में भी वही है वही है अयोध्या में ।।

भगवान है मौजूद हर जर्रे में इसके ।
किबला हो यही मुल्क वो ईमान पैदा कर ।।

अरबों को ज्यों प्यारा अरब ईरानी को ईरान ।
वैसे ही हिंदियों तुम्हें प्यारा हो हिन्दुस्तान ।।

१

मादर ए वतन

मादर ए वतन से हमको मोहब्बत है बेपनाह।
वर्ना चलती तेग पर सीना अड़ा देता है कौन ?

बहुत गौरी गजनी आये थे सवार पैगाम ए सैफ।
देखने आये थे हिंदी तेग चमकाता है कौन ?

खून के दरया थे हर सू बह रहे सरहिंद में।
माँ थी रोती अरबी बातिल को फना करता है कौन ?

ख़ाक करते थे बुतों को पैरों से वो बुतशिकन।
होड़ सी थी हर्ब को ईमान कर देता है कौन ?

फिर कोई राणा शिवा तो कोई वैरागी उठा।
गरजा हिंदी धरती पे तकबीर गुंजाता है कौन ?

है अभी तक हल्दीघाटी की फिजा में गूंजता।
जंग में राणा के भाले से जो टकराता है कौन ?

पूछती हैं अब तलक भी अफज़लों की चीख ये।
घर में आकर चीरने वाला शिवा आखिर है कौन ?

अशफाक बिस्मिल नाम थे दहशत के गोरों के लिए।
लाश के आज़ाद की नज़दीक जा सकता है कौन ?

ख़्वाब में भी कौन हो सकता है सावरकर सा वीर।
चलती कश्ती से समंदर कूद कर जाता है कौन ?

हम थे नादाँ गा रहे अब तक तराने गैरों के।
छोड़ के अपनों के किस्से गैर को गाता है कौन ?

हम हैं गाते ये तराने- आजादी खड्गों बिना।
देखना है खड्ग शहीदी सीने से लगाता है कौन ?

कुछ दीवानापन सा हमको भी हुआ है अब सवार।
देखना है बंसी रख रण शंख बजवाता है कौन?

१

ध्वजा ओम की

पूरे संसार को श्रेष्ठ बनाने का संकल्प। व्यर्थ के जाति बंधन तोड़ कर मानव मात्र को एक करने का संकल्प।

वीरों की उठती उमंग बन
सागर की मचली तरंग बन
अमर फाग का दिव्य रंग बन
लहरा लहरा ध्वजा ओम की !

प्रेम पवन के मधुर झकोरे
स्नेह सुधा के सुभग हिलोरे
टंकारे के वानक गोरे
आ फिर बन जा ध्वजा ओम की !

मोर्वी की टंकार गुंजा फिर
विश्व विजय का तार हिला फिर
वह वैरी से प्यार दिखा फिर
चहुँ दिश चमका ध्वजा ओम की !

जय जय जय पाखण्ड खंडनी
जय जय जय दुश्चरित दंडनी
जय जय जय सद्धर्म मंडनी
दुखहर सुखदा ध्वजा ओम की !

फिर ऋषियों के साम गान हों
मनुज मात्र के वेद प्राण हों
जीव जात बांधव समान हों
ऐसा युग ला ध्वजा ओम की !

ओम ओम का कर उच्चारण
निश दिन करती जा प्रभु पूजन
अविरत चिंतन अविरत सिमरण
यह रस बरसा ध्वजा ओम की !

किस दीपक की ज्वाला है तू
किस उर की मणिमाला है तू
उतरी ज्यों सुर बाला है तू
गिरी निश शोभा ध्वजा ओम की !

हम सब तुझ पर प्राण वार दें
जननी पर जी जान वार दें
सुख संपत सम्मान वार दें
यह वर दे जा ध्वजा ओम की !

- पंडित चमूपति

१

हकीकत राय का अमर बलिदान

हजारों आवाजें एक साथ उठ रही थीं- अपना धर्म छोड़ दे। पर शेर अकम्प खड़ा था। माता की आँख में आंसू थे। उसने माँ के आंसू पोंछे। जल्लाद के आगे सर तान लिया, अगले ही पल वो पावन सर मातृभूमि की गोद में था। बालक मर चुका था पर धर्म जी उठा था। ये था हकीकत राय का अमर बलिदान।

कितना भी दुःख हो शोक तुम नहीं करना।
है कृष्ण का सन्देश शोक मत करना।।

याद आये जब दिल में अपने दुखों की।
तुम याद कोई बलिदान कर लेना।।

चौदह साल का बालक एक हकीकत था।
जंजीरों में जकड़ा खड़ा दरबार में था।।

काजी ने पूछा क्या है ईमान क़ुबूल ?
रहना है जिन्दा तुझको या मरना है क़ुबूल ?

उसने चेहरा उठा के देखा काजी की तरफ।
सबकी नजरें थीं उठीं लेकिन बालक की तरफ।।

स्याने सब कह रहे थे कर ले ईमान क़ुबूल ।
शोर सब ओर से होता था कर ईमान क़ुबूल ।।

नम आँखों से एक बार बस माँ को देखा ।
उन आँखों में आंसू का समंदर देखा ।।

एक हाथ से था पोंछता माँ के आंसू ।
दूजे हाथ से था पोंछता अपने आंसू ।।

हिल गए ये नजारा देख पत्थर भी ।
रुक रुक के देखने लगे परिंदे भी ।।

इतने में अचानक एक शोर हुआ ।
तकबीर का नारा फिर बुलंद हुआ ।।

काजी ने कहा फिर से- है ईमान क़ुबूल ?
भीड़ से शोर उठा- कर ले ईमान क़ुबूल ।।

इतने में हकीकत गरजा सुन काजी !
तुम कहते हो मैं कर लूं ईमान क़ुबूल ?

हकीकत को तो बस राम का है नाम कबूल ।
राम के भक्त कभी बनते हैं गुलाम ए रसूल ?

'धर्म जिस जीने से खो जाए वो जीना है फिजूल' ।
धर्म जिस मरने से जी जाए वो मरना है मंजूर ।।

धर्म प्यारा है मुझे है नहीं ईमान क़ुबूल ।
तेरा दीं तुझको मुबारक नहीं ईमान क़ुबूल ।।

छाया था सन्नाटा मुग़ल के खेमे में ।
दिल शेर का है क्या इस कलेजे में ।।

काजी ने कहा कर दो सर इसका कलम ।
गुस्ताख को मारो करो फितने को खतम ।।

था तैयार भी जल्लाद काम करने को ।
तलवार जो उठी तो लगी गर्दन को ।।

अगले ही पल वो सर हुआ जुदा तन से ।
एक धुन सी उठ रही थी उस गर्दन से ।।

धर्म की राह में मर जाते हैं मरने वाले ।
'मरके जी उठते हैं जी जाँ से गुजरने वाले' ।।

कितना ही अँधेरा क्यों न हो दुनिया में ।
कितनी ही विपत्ति क्यों न हों जीवन में

हरा के उनको धर्म पे बढते जाना ।
बलिदान हकीकत का सुनाते जाना... ।।

१

महाराणा प्रताप

भारत माँ के कुछ दमदार पुत्र ऐसे हैं जिन्होंने विपत्ति के समय में भी दुनिया में इस देश का नाम गुंजाये रखा। महाराणा प्रताप ऐसा ही एक नाम है।
महाराणा प्रताप के जीवन की कुछ घटनाएं इस कविता में हैं।

मुगल काल में पैदा हुआ वो बालक कहलाया राणा।
होते जौहर चित्तौड़ दुर्ग फिर बरसा मेघ बन के राणा।।

हरमों में जाती थीं ललना बना कृष्ण द्रौपदी का राणा।
रौंदी भूमि ज्यों कंस मुग़ल बना कंस को अरिसूदन राणा।।

छोड़ा था साथियों ने भी साथ चल पड़ा युद्ध इकला राणा।
चेतक का पग हाथी मस्तक ज्यों नभ से कूद पड़ा राणा।।

मानसिंह भयभीत हुआ जब भाला फैंक दिया राणा।
देखी शक्ति तप वीर व्रती हाथी भी कांप गया राणा।।

चहुँ ओर रहे रिपु घेर देख सोचा बलिदान करूँ राणा।
शत्रु को मृगों का झुण्ड जान सिंहों सा टूट पड़ा राणा।।

देखा झाला यह दृश्य कहा अब सूर्यास्त होने को है।
सब ओर अँधेरा बरस रहा लो डूबा आर्य भानु राणा।।

गरजा झाला के भी होते रिपु कैसे छुएगा तन राणा ।
ले लिया छत्र अपने सिर पर अविलम्ब निकल जाओ राणा ।।
हुंकार भरी शत्रु को यह मैं हूँ राणा मैं हूँ राणा ।

नृप भेज सुरक्षित बाहर खुद बलि दे दी कह जय हो राणा ।
कह नमस्कार भारत भूमि रक्षित करना रक्षक राणा!

चेतक था दौड़ रहा सरपट जंगल में लिए हुए राणा ।
आ रहा शत्रुदल पीछे ही नहीं छुए शत्रु स्वामी राणा ।।

आगे आकर एक नाले पर हो गया पार लेकर राणा ।
रह गए शत्रु हाथों मलते चेतक बलवान बली राणा ।।

ले पार गया पर अब हारा चेतक गिर पड़ा लिए राणा ।
थे अश्रु भरे नयनों में जब देखा चेतक प्यारा राणा ।।

अश्रु लिए आँखों में सिर रख दिया अश्व गोदी राणा ।
स्वामी रोते मेरे चेतक! चेतक कहता मेरे राणा !

हो गया विदा स्वामी से अब इकला छोड़ गया राणा ।
परताप कहे बिन चेतक अब राणा है नहीं रहा राणा ।।

सुन चेतक मेरे साथी सुन जब तक ये नाम रहे राणा ।
मेरा परिचय अब तू होगा कि वो है चेतक का राणा !

अब वन में भटकता राजा है पत्थर पे सोता है राणा ।

दो टिक्कड़ सूखे खिला रहा बच्चों को पत्नी को राणा ।।

थे अकलमंद आते कहते अकबर से संधि करो राणा ।
है यही तरीका नहीं तो फिर वन वन भटको भूखे राणा ।।

हर बार यही उत्तर होता झाला का ऋण ऊपर राणा ।
प्राणों से प्यारे चेतक का अपमान करे कैसे राणा ।।

एक दिन बच्चे की रोटी पर झपटा बिलाव देखा राणा ।
हृदय पर ज्यों बिजली टूटी अंदर से टूट गया राणा ।।

ले कागज़ लिख बैठा, अकबर! संधि स्वीकार करे राणा ।
भेजा है दूत अकबर के द्वार ज्यों पिंजरे में नाहर राणा ।।

देखा अकबर वह संधि पत्र वह बोला आज झुका राणा ।
रह रह के दंग उन्मत्त हुआ कह आज झुका है नभ राणा ।।

विश्व विजय तो आज हुई बोलो कब आएगा राणा ।
कब मेरे चरणों को झुकने कब झुक कर आएगा राणा ।।

पर इतने में ही बोल उठा पृथ्वी यह लेख नहीं राणा ।
अकबर बोला लिख कर पूछो लगता है यह लिखा राणा ।।

पृथ्वी ने लिखा राणा को क्या बात है क्यों पिघला राणा ?
पश्चिम से सूरज क्यों निकला सरका कैसे पर्वत राणा ?

चातक ने कैसे पिया नदी का पानी बता बता राणा ?
मेवाड़ भूमि का पूत आज क्यों रण से डरा डरा राणा ?

भारत भूमि का सिंह बंधेगा अकबर के पिंजरे राणा ?
दुर्योधन बाँधे कृष्ण तो क्या होगी कृष्णा रक्षित राणा ?
अब कौन बचायेगा सतीत्व अबला का बता बता राणा ?
अब कौन बचाए पद्मिनियाँ जौहर से तेरे बिन राणा?

यह पत्र मिला राणा को जब धिक्कार मुझे धिक्कार मुझे ।
कहकर ऐसा वह बैठ गया अब पश्चाताप हुआ राणा ।।

चेतक झाला को याद किया फिर फूट फूट रोया राणा ।
बोला इस पापकर्म पर तुम अब क्षमा करो अपना राणा ।।

और लिख भेजा पृथ्वी को कि नहीं पिघल सके ऐसा राणा ।
सूरज निकलेगा पूरब से, नहीं सरक सके पर्वत राणा ।।

चातक है प्रतीक्षारत कि कब होगी वर्षा पहली राणा ।
भारत भूमि का पुत्र हूँ फिर रण से डरने का प्रश्न कहाँ?

भारत भूमि का सिंह नहीं अकबर के पिंजरे में राणा ।
दुर्योधन बाँध सके कृष्ण ऐसा कोई कृष्ण नहीं राणा ।।

जब तक जीवन है इस तन में तब तक कृष्णा रक्षित राणा ।

अब और नहीं होने देगा जौहर पद्मिनियों का राणा !

१

बचपन और जवानी

जवानी आयी और बचपन विदा हो गया ! पर जाते जाते बचपन कुछ कह गया ! बचपन की जवानी को सीख, इस कविता में ।

जवानी से कुछ यूँ कहके लौटा बचपन ।
पाकीज़गी आँखों की सलामत रखना ।।

ताक़त से कभी फूल मसलना नहीं तुम ।
ताकत से उन फूलों की हिफाजत करना ।।

कमजोर पर कभी नहीं जबर करना ।
पाकीजगी हाथों की सलामत रखना ।।

मजलूम को अक्सर दबाती है दुनिया ।
कर जुल्म ख़तम उसकी हिमायत करना ।।

दिल फूल और बदन को पत्थर करना ।
बदकार औ जालिम की क़यामत बनना ।।

बाजारों में सजी हैं माँ बहन किसी की ।
तू अपनी माँ समझके बगावत करना ।।

दुनिया कहेगी ले ले जवानी के मजे ।
पाकीजगी तू दिल की सलामत रखना ।।
भगवान ने तो जिस्म कर दिया है जवाँ ।
दिल आँखों से मगर तुम बच्चे रहना ।।

जवानी से कुछ यूँ कहके लौटा बचपन ।
पाकीज़गी आँखों की सलामत रखना ।।

१

दुनिया और मैं

दुनिया को प्यार करना ।
है खुद को प्यार करना ।।

हो चोट गैर पर तो ।
दिल मेरा भी दुखाना ।।

हर होंठ पे हंसी हो ।
लब मेरे खिलखिलाना ।।

कमजोर बाजुओं की ।
ताकत मुझे बनाना ।।

नीलाम हो जो इज्जत ।
आँचल मुझे बनाना ।।

भगवान दुनिया तेरी ।
मेरी इसे बनाना ।।

इसका मुझे बनाना ।
मेरी इसे बनाना... ।।

१

भाई तू क्यों नहीं आया ?

उसने भाई को पुकारा होगा, पर कोई नहीं आया। समाज में दुशासन तो सब हैं, कृष्ण कौन बनेगा?

कानों में यकायक उठी बेबस सी सिसकियां
मैंने पलट के देखा तो इक लड़की थी वहाँ
जब गौर से देखा तो आसमान फट गया
जो चल बसी वो मेरी बहन थी खड़ी वहाँ

देखा तो मुझे दर्द का सैलाब फट पड़ा
आँखों में उसके जुल्म का तूफान फट पड़ा
पूछा जब उसने भाई तू क्यों नहीं आया
गैरों ने देख क्या किया तू क्यों नहीं आया

वो चोट जिस्म पर लिए चुपचाप खड़ी थी
वहशत के निशाँ तन पे थे पर मौन खड़ी थी
छह मर्दों की नामर्दी से अकेली लड़ी थी
आखिर में उसे लेने को फिर मौत खड़ी थी

तन खून से लथपथ था आँचल गिरा लिया
सर उसने मेरी बाँह में अपना छिपा लिया
मंजर ये देख पत्थर दिल भी पिघल गए
सूरज ने भी ये देख खुद को छिपा लिया

वो बोली क्या राखी है बस धागे का एक नाम
क्या बहन की हिफाजत भाई का नहीं काम ?
दुशासनों ने फिर से घसीटी है द्रौपदी
क्यों कृष्ण ने बचाया नहीं बहन का सम्मान ?

राखी है नाम भाई का बहनों को बचाना
राखी है नाम मर्द का औरत को बचाना
राखी है नाम अजनबी को बहन बनाना
फिर बहन की रक्षा में जी जान लगाना

पर यहाँ तो दस्तूर हैं हैवानों के जारी
खुद अपने ही होते हैं कई बार शिकारी
हर एक की जुबां पे हैं माँ बहन की गाली
हर एक जबां गंदी है हर आँख है काली

हे भाई तू सब बहनों की रक्षा सदा करना
दुशासनों की दुनिया में श्रीकृष्ण तुम बनना
हर द्रौपदी के सर पे अपना हाथ बढ़ाना
मानवता क्या होती है ये दुनिया को दिखाना

इतना था कहना उसका कि वो मंद हो गई
इस भाई के हाथों में वो विलीन हो गयी
दुनिया के सफर को यहीं पे खत्म कर चली
भगवान की गोदी में कहीं दूर हो चली...

१

माँ

बचपन में खोई कहीं गुडिया सी कभी बड़ी हो जाती माँ ।
फिर छोड़ एक दिन मात पिता दुल्हन सी विदा हो जाती माँ ।।

सब छोड़ मीत रिश्ते नाते नए घर को बसाने जाती माँ ।
एक दिन गोदी में फूल खिला जग में फिर माँ बन जाती माँ ।।

अंधेरों में हमको यूं लपेट नौ माह छुपा रखती है माँ ।
दुनिया के उजाले देती है फिर दिल में छुपा लेती है माँ ।।

भगवान नजर आता है नहीं पर पास नजर आती है माँ
नन्ही अखियाँ ना खोजें खुदा वो खोज रहीं कैसी है माँ ।।

रोते हैं कभी दिल के टुकड़े तो आँख भिगो लेती है माँ ।
हँसते हैं कभी उसके बच्चे तो दर्द भुला देती है माँ ।।

मन पे पत्थर रख कर जो कभी हलके से डपट देती है माँ ।
बच्चों की खुशी की खातिर पर दुनिया से टकरा जाती माँ ।।

दुनिया कहती है बावरिया पर फ़िक्र कहाँ करती है माँ ।
दुनिया है चलती ज्ञान अकल से दिल से बस चलती है माँ ।।

तुतलाते होठों की तरंग में खुद भी तुतलाती है माँ ।
हाथों को थामकर नन्हे पग धरती पे चलवाती है माँ ।।
उस तुतलाते लड़खाते बचपन को मजबूत बनाती माँ ।
गिरने से पहले बाँह फैला सीने से लगा लेती है माँ ।।

चोट लगी बालक तन पर लतपथ लेकिन हो जाती माँ ।
दवा हो जाते उसके आंसू दुआ वो खुद हो जाती माँ ।।

नहीं है कोई पीर पैगम्बर नहीं कोई योगी बिन माँ ।
मूरत भगवान की क्या देखूं जब पास खड़ी हो मेरी माँ ।।

दुनिया ने कहा अबला उसको ये क्या समझेंगे क्या है माँ
कंसों का काल रण की गुंजार कहीं कृष्ण बना देती हैं माँ ।।

अभिमन्यु कटा चहुँ ओर घिरा उस वीर का आदि अंत है माँ ।
महाराणा की तलवार शिवाजी की टंकार में जीजा माँ ।।

बलियों के बलों में रमती माँ शूरों के खून में बहती माँ ।
अग्नि की धधक में रहती माँ वीरों की जीत में बसती माँ ।।

मेरी भी नहीं तेरी भी नहीं वो तो होती सबकी सांझी माँ ।
ना हिंदू की ना मुस्लिम की माँ तो बस एक होती है माँ ।।

मानव! तू न यूं घूर उसे, वो कभी बनेगी एक दिन माँ ।
तेरे जैसे एक बालक को फिर बड़ा करेगी एक दिन माँ ।।

है वो भी तन मन से वैसी जैसी है तेरी प्यारी माँ ।
उसकी इज्जत भी वैसी है जैसी है तेरी प्यारी माँ ।।

सम्मान तू कर इतना उसका हर चेहरा याद दिलाए माँ ।
कह गैर को माँ, कि याद रखे तुझे मरने पर भी तेरी माँ ।।

लेखक परिचय

विज्ञान, धर्म, इतिहास, मुस्लिम शासन, मुग़ल काल, मज़हबी कट्टरपंथ और आतंकवाद के देश-विख्यात विद्वान। सैंकड़ों भटके हुए नौजवानों को आतंकवाद के रास्ते से छुड़ा कर इंसानियत पर लाने वाले युवा जादूगर। ज्वलंत मुद्दों पर कई हिंदी और अंग्रेज़ी पुस्तकों के लेखक, कवि, वक्ता और वैज्ञानिक। विश्वविख्यात भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT Bombay) से शिक्षा प्राप्त, और भारत सरकार द्वारा प्रतिष्ठित INSPIRE Faculty पुरस्कार से सम्मानित। अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक जर्नल्स में अनेक शोध-पत्रों के लेखक। डॉ वाशि शर्मा वर्तमान में अग्निवीर के अध्यक्ष हैं।

अग्निवीर - संक्षिप्त परिचय

भारत के दो सर्वाधिक प्रतिष्ठित शिक्षा संस्थानों - भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान और भारतीय प्रबंधन संस्थान (IIT and IIM) से शिक्षा प्राप्त एक वैज्ञानिक योगी श्री संजीव नेवर द्वारा संस्थापित अग्निवीर आज धर्म, दर्शन, विज्ञान और आध्यात्म के परस्पर समन्वय से उठी एक शक्ति बन कर उभरा है जो समाज में मनुष्य के व्यक्तिगत, सामाजिक, और आत्मिक विकास में अतुल्य योगदान दे सके। प्राचीन वेदों के गूढ़ रहस्यों से लेकर भगवद्गीता के कर्म संदेश तक और गीता से लेकर वास्तविक योग तक की हर सिद्धि और शक्ति को मानव मात्र के कल्याण में लगाने के दृढ़ संकल्प के साथ अग्निवीर कर्मक्षेत्र में दृढ़ता से खड़ा है। हज़ारों मित्रों के पत्र, ईमेल और धन्यवाद संदेश अग्निवीर के सार्थक प्रयासों की एक झलक देते हैं। वीरता, ओज, कर्म और पुरुषार्थ से ओतप्रोत अग्निवीर के वैदिक संदेशों के साथ आत्महत्या के विचारों, क्षोभ, अवसाद, हार, रोग, और दुःख से ग्रसित सैंकड़ों लोगों में नया जीवन जीने की राह फिर से पैदा हुई। किसी भी प्रकार के अन्याय के विरुद्ध डट कर लड़ने और उस पर विजयी होने की सात्विक भावना फिर से प्रबल हुई।

शक्तिशाली अन्यायी के सामने डर, समझौते, समर्पण और झूठे इतिहास के कारण ज़मीन में दफ़न कर दिए गए मुद्दों को भारतीय जनमानस में दोबारा जीवित करने के पीछे अग्निवीर एक मुख्य कारक है। समाज में जात पात और लिंगभेद को मिटाने के उद्देश्य से शुरू किए गए अग्निवीर दलित यज्ञ आज जहाँ सामाजिक एकता की नयी मिसाल बन कर उभरे हैं वहीं सदियों पुरानी इस समस्या के समाधान का मार्ग भी प्रशस्त करते हैं। मज़हबी कट्टरता और कठमुल्ला मानसिकता से त्रस्त मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों की एकमात्र आवाज़ बनकर उभरने

वाले अग्निवीर ने एक से ज़्यादा बीवियों की रिवायत, तीन तलाक़, हलाला, और ज़बरदस्ती मज़हबी वेश्यावृत्ति और लव जिहाद के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलंद की। इसके फलस्वरूप कट्टरपंथी निशाने पर आने के बावजूद अग्निवीर ने सैंकड़ों महिलाओं को मज़हबी दहशतगर्दी से निजात दिलाई। अग्निवीर की ऑनलाइन तत्काल सहायता सेवा ने कितनी ही ऐसी जिंदगियों में फिर से मुस्कुराहट बिखेरी।

देश में बढ़ते आतंकवाद, कट्टरता और असुरक्षा के माहौल के बीच अग्निवीर ने निःशस्त्र आत्मरक्षा की कार्यशाला की नींव डाली। देश के कई संवेदनशील शहरों और स्थानों में नियमित अग्निवीर कार्यशालाएँ असुरक्षित वर्ग में आत्मरक्षा की भावना पैदा करती हैं। सैंकड़ों युवा जो भटक कर आतंकवाद और मज़हबी कट्टरपंथ के रास्ते पर चल पड़े थे, उनको वापस मानवता में लाने का श्रेय अग्निवीर को जाता है। भारत के इतिहास की किताबों में आक्रांतों और हमलावरों के शर्मनाक हमलों को इतिहास का सुनहरा दौर बताने की शर्मनाक रिवायत को अग्निवीर ने ही पहली बार अकाट्य प्रमाणों, तथ्यों और तर्कों के साथ इतने संवेग के साथ ध्वस्त किया है कि सरकारें भूल सुधार को विवश हैं।

सामाजिक एकता, महिला अधिकार, मानव अधिकार, मज़हबी कट्टरता, इतिहास और धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन पर कई प्रामाणिक पुस्तकों के प्रकाशन से जहाँ अग्निवीर ने दीर्घकालिक सुधार की एक ठोस नींव रखी है वहीं योग, आध्यात्म, सनातन हिंदू धर्म और जीत व जोश की प्रेरणा देने वाली अतुल्य पुस्तकों से मानव मात्र को प्रेम, एकता और वीरता के वैदिक पथ पर चलने के लिए प्रेरित किया है।

अग्निवीर से जुड़िए और सार्थक जीवन का आनंद लीजिए।

अधिक जानकारी के लिए, नीचे दिए गए लिनक्स की सहायता लें

वेबसाईट: www.agniveer.com

फेसबुक: www.facebook.com/agniveeragni

यूट्यूब: www.youtube.com/agniveer

ट्विटर: www.twitter.com/agniveer

अग्निवीर से जुड़ने के लिए: www.agniveer.com/membership-form/

अग्निवीर को अपना सहयोग देने के लिए:

पमेंट पेज: www.agniveer.com/pay

पेपल इमेल: give@agniveer.com

अग्निवीर द्वारा प्रकाशित दूसरी किताबों को खरीदने के लिए: www.agniveer.com/books

AGNIVEER

SERVING NATION | PROTECTING DHARMA